IJAER/September-October 2024/Volume-13/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षण सम्बन्धी सुविधाओं का अध्ययन

डॉ. अल्का शर्मा
(रिसर्च सुपरवाईजर)
महाराज विनायक ग्लोबल **विश्वविद्यालय**
कूकस (जयपुर), राजस्थान

नेहा चर्तुवेदी
(रिसर्च स्कॉलर)
महाराज विनायक ग्लोबल **विश्वविद्यालय**
कूकस (जयपुर), राजस्थान

सार

इस अध्ययन हेतु सामग्री व डाटा अवलोकन अनुसूची, गणित कक्षा अवलोकन अनुसूची, अंग्रेजी में रीडिंग टेस्ट, अंग्रेजी में कॉम्प्रिहेंशन टेस्ट और अंकगणित परीक्षण जैसे सात उपकरणों को विकसित करने के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त की गई शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में वास्तविकता से परिचित हुआ जा सकता है। अनुसंधान पद्धति, जनसंख्या, अध्ययन का नमूना, अनुसंधान उपकरण, डेटा संग्रह की प्रक्रिया और डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण से सही परिणाम तक पहुंचा जा सकता है। प्रासंगिक और बेहतर शिक्षा के साथ, महिलाएं अपने सामाजिक स्तर में स्पष्ट सुधार कर सकती हैं। आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को बेहतर बनाने हेतु शिक्षा प्रणाली महिलाओं के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक सशक्तीकरण की कुंजी है। वर्तमान काल ने शिक्षार्थी की विद्यालयी शिक्षा के सम्बन्ध में उनकी सोच को परिवर्तित किया है और वे भविष्य में अपने व्यवसाय के चयन हेतु स्कूली शिक्षा को महत्वपूर्ण मानने लग गये है। पूर्व में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण एवं ज्ञान की प्राप्ति था परन्तु वर्तमान की स्थितियाँ इस सम्बन्ध में बिल्कुल अलग है। निजी विद्यालयों में उपरोक्त उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये आधारभूत संरचना एवं शिक्षण व्यवस्था को बेहतर बनाये रखने के गम्भीर प्रयास किये जा रहे हैं। इसके विपरीत राजकीय विद्यालयों में इसके प्रति उस तरह की गम्भीरता नहीं पायी जाती। यह स्थिति दोनों प्रकार के विद्यालयों में परीक्षा परिणाम में भारी अन्तर से स्थापित हो जाती है।

मुख्य शब्द : *सरकारी, शिक्षण, गैर सरकारी*

परिचय

शिक्षार्थी में परिवर्तन ज्ञान, दृष्टिकोण या व्यवहार के स्तर पर हो सकता है। सीखने के परिणामस्वरूप, शिक्षार्थियों को अवधारणाओं, विचारों और दुनिया को अलग तरह से देखने के लिए मजबूर किया जाता है। सीखना छात्रों के लिए किया जाने वाला कार्य नहीं है, बल्कि कुछ ऐसा है जो छात्र स्वयं करते हैं। यह इस बात का परिणाम है कि छात्र अपने अनुभवों की व्याख्या और प्रतिक्रिया कैसे करते हैं जबकि छात्र जो सीखते हैं उसमें अनुशासनात्मक अंतर होते हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सीखने की सामग्री या जानकारी सीखने का केवल एक हिस्सा है। अध्ययन के क्षेत्र की परवाह किये बिना, छात्रों को बौद्धिक कौशल सोच प्रक्रिया, समस्या समाधान, वैज्ञानिक पूछताछ, मोटर कौशल और व्यवहार/मूल्यों को विकसित करने और अभ्यास करने के लिए महत्वपूर्ण अवसरों की आवश्यकता है जो उनके अध्ययन के क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, छात्रों को पारस्परिक और सामाजिक कौशल विकसित करने के अवसरों की आवश्यकता होती है जिन्हें अक्सर सॉफ्ट कौशल कहा जाता है और जो पेशेवर और व्यक्तिगत सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन कौशलों के उदाहरणों में टीम वर्क, प्रभावी संचार, संघर्ष समाधान और रचनात्मक सोच शामिल हैं। शिक्षण सहायकों और प्रशिक्षकों के रूप में यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि सामग्री की तुलना में सीखने के

लिए बहुत कुछ है और केवल सामग्री पर ही नहीं बल्कि सोचने की प्रक्रियाओं और अन्य प्रकार के सीखने पर भी ध्यान देना चाहिए।

सुविधायें व गुणवत्ता इस बात पर जोर देती है कि कच्चे माल को उत्पादों और ग्राहकों को संतुष्ट करने वाले डिलिवरेबल्स में बदलने के लिए सभी तत्वों का एक साथ फिट होना महत्वपूर्ण है। ग्राहक संतुष्टि वह परिणाम है जिसे टीक्यूएम द्वारा सबसे अधिक संबोधित किया गया है। टीक्यूएम के मूल सिद्धांतों का वर्णन इस प्रकार हैं: दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य, ग्राहक फोकस, और शीर्ष प्रबंधन प्रतिबद्धता, सिस्टम सोच, गुणवत्ता में प्रशिक्षण और उपकरण, कर्मचारियों की भागीदारी में वृद्धि, विकास एक माप और रिपोर्टिंग प्रणाली, प्रबंधन और श्रम के बीच बेहतर संचार, और निरंतर सुधार। यह देखा जा सकता है कि TQM दो मुख्य धारणाओं का वर्णन करती है: 1. निरंतर सुधार और 2. उपकरण और तकनीक/उपयोग की जाने वाली विधियाँ। सामान्य तौर पर, TQM में कई प्रबंधन शामिल होते हैं और व्यापार दर्शन दर्शन में इसका ध्यान उस परिदृश्य के आधार पर स्थानांतरित हो जाता है जहां TQM लागू होता है। चाहे वह उद्योग में हो या शिक्षा में, TQM दर्शन ग्राहक के इर्द–गिर्द घूमता है।

शिक्षण और सीखने की प्रकृति के बारे में विश्वास

शिक्षण और सीखने की प्रकृति के बारे में मान्यताएँ जो, TALIS का फोकस हैं, उनमें सीखने और निर्देश के बारे में प्रत्यक्ष संचरण विश्वास और सीखने तथा निर्देश के बारे में रचनावादी मान्यताएँ शामिल हैं। इन मान्यताओं के ये आयाम कम से कम पश्चिमी देशों में शैक्षिक अनुसंधान में अच्छी तरह से स्थापित हैं और उन्हें अन्यत्र भी समर्थन प्राप्त हुआ है। छात्र सीखने का प्रत्यक्ष संचरण दृश्य यह दर्शाता है कि एक शिक्षक की भूमिका ज्ञान को स्पष्ट और संरचित तरीके से संप्रेषित करना है व सही व्याख्या करना है। समाधान, छात्रों को स्पष्ट और हल करने योग्य समस्याएं देने के लिए, और कक्षा में शांति और एकाग्रता सुनिश्चित करने के लिए है। इसके विपरीत, एक रचनावादी दृष्टिकोण छात्रों को निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में नहीं बल्कि ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में केंद्रित करता है। इस दृष्टिकोण को रखने वाले शिक्षक छात्र की पूछताछ को सुविधाजनक बनाने पर जोर देते हैं, छात्रों को अपने दम पर समस्याओं का समाधान विकसित करने का अवसर देना पसंद करते हैं और छात्रों को निर्देशात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने की अनुमति देते हैं। यहां विशिष्ट ज्ञान के अधिग्रहण की तुलना में सोच और तर्क प्रक्रियाओं के विकास पर अधिक जोर दिया जाता है।

कई कारक, जैसे अध्ययन का वर्ष, कक्षा का आकार, समन्वयकों का व्यावसायिक विकास, शिक्षा और शिक्षण गुणवत्ता से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित है। शिक्षा के महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक प्रभाव हैं। शिक्षा भी अनुसंधान का ध्यान आकर्षित करती है क्योंकि इसके अध्ययन का उद्देश्य सभी शैक्षणिक विषयों का संस्थागत आधार और समाज के भविष्य के लिए व्यवस्थित ज्ञान का योगदान है। इस कारण से शिक्षा और शिक्षण गुणवत्ता की जांच और सुधार करना महत्वपूर्ण है।

शिक्षा और शिक्षण गुणवत्ता में निम्नलिखित शामिल हैं: गुणवत्तापूर्ण शिक्षार्थी जो भाग लेने और सीखने के लिए तैयार हैं, गुणवत्ता सामग्री जो प्रासंगिक पाठ्यक्रम और बुनियादी कौशल के अधिग्रहण के लिए सामग्री में परिलक्षित होती है व गुणवत्ता प्रक्रियाएं।

गुणवत्ता का मतलब उत्कृष्टता की डिग्री है और वो आवश्यक चरित्र है जो कुछ अद्वितीय और अपनी तरह का सबसे अच्छा बनाता है। इसका अर्थ है एक विशेषता या एक ऐसी विशेषता जो किसी चीज में है और उसके एक हिस्से के रूप में देखी जा सकती है। इसका मतलब है कि कोई चीज कितनी अच्छी और उपयोगी है। यह उत्पाद की एक उपयोगितावादी और सहायक विशेषता है। गुणवत्ता श्रेष्ठता की प्रेरणा है। इसे आम तौर पर आवश्यकताओं के अनुरूप के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह मानक के अनुरूप भी है जो आवश्यक है। कई लोग मानते हैं कि गुणवत्ता को आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे दुनिया में सर्वश्रेष्ठ होने का आश्वासन देना चाहिए।

निजी स्कूलों की परिभाषा

निजी स्कूल शब्द के अर्थ को केवल अभिजात्य और चयनात्मक स्कूल के रूप में आरोपित करना स्थिति की जटिलता को नहीं दर्शाता है। जहाँ निजी स्कूल नहीं है, बल्कि प्रायोजन के कुछ हिस्से हैं जो या तो सार्वजनिक या गैर–सरकारी हैं – वित्तीय, प्रायोजन और कानूनी स्थिति के आधार पर इन अलग–अलग प्रकार के स्कूलों के बीच यह अंतर हमेशा स्थिर और स्पष्ट नहीं होता है।

- शिक्षा का वित्तपोषणः गैर–सरकारी स्कूलों को उनके वित्त पोषण के मुख्य स्रोतों के अनुसार अलग किया जा सकता है– जो कर्मियों, बुनियादी ढांचे और शिक्षण और सीखने की सामग्री को वित्तपोषित कर रहे हैं– और इन खर्चों का कौन सा हिस्सा राज्य, निजी निकायों और माता–पिता द्वारा वहन किया जा रहा है? लाभ उन्मुखीकरण वाले या बिना लाभ वाले स्कूलों के बीच और उच्च और निम्न स्कूल फीस वाले स्कूलों के बीच अंतर भी किया जा सकता है (निजी स्कूल बनाम कम शुल्क वाले निजी स्कूल / कम लागत वाले स्कूल)।

- प्रायोजनः कई प्रकार के प्रायोजन मॉडल हैं। प्रायोजक धार्मिक या सांप्रदायिक संस्थान, कंपनियां, स्थानीय या अंतरराष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन या मूल समुदाय और संघ हो सकते हैं। निजी प्रायोजकों और राज्य के बीच श्रम का विभाजन अलग–अलग हो सकता है।

शिक्षण की अवधारणाएँ

वे विचार या मानसिक चित्र जो शिक्षकों के पास उनकी व्यावसायिक गतिविधियों और उनके छात्रों के बारे में होते हैं, जो उनके पृष्ठभूमि ज्ञान और जीवन के अनुभवों से आकार लेते हैं और उनके पेशेवर व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

इस लेख का उद्देश्य निम्न है–

1. सरकारी व निजी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता एवं सुविधाओं में भिन्नता के कारणों की जांच करना।

2. शिक्षा में गुणवत्ता एवं सुविधाओं के सम्बन्ध में विद्यार्थियों व शिक्षकों की राय प्राप्त कर उनका विश्लेषण करना।

अध्ययन की पद्धति

इस अध्ययन में अध्ययन की रूपरेखा, प्रक्रिया एवं विषयों का चयन, चरों का चयन, परीक्षणों का विवरण, आँकडों का संग्रह, सांख्यिकीय विश्लेषण को नियोजित एवं प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तर्गत बुनियादी सुविधाओं की अवलोकन अनुसूची, निर्देशात्मक सुविधाओं की अवलोकन अनुसूची, अंग्रेजी कक्षा अवलोकन अनुसूची, गणित कक्षा अवलोकन अनुसूची, अंग्रेजी में रीडिंग टेस्ट, अंग्रेजी में कॉम्प्रिहेंशन टेस्ट और अंकगणित परीक्षण जैसे सात उपकरणों को विकसित करने की प्रक्रिया को समझने के पश्चात् आवश्यक कार्यवाही की गयी है। अनुसंधान पद्धति, जनसंख्या, अध्ययन का नमूना, अनुसंधान उपकरण, डेटा संग्रह की प्रक्रिया और डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात यह लेख लिखा गया है।

अध्ययन का नमूना

यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक द्वारा स्कूल, ग्रेड और छात्रों के तीन अलग–अलग नमूने उनकी संबंधित आबादी से चुने गए हैं।

नमूना लेने की प्रक्रिया का विवरण निम्नलिखित अनुवर्ती पैराग्राफों में समझाया गया है।

नमूनाकरण चरण

प्रथम चरण में राजकीय एवं निजी प्रारंभिक विद्यालयों का चयन जनपद–सह–उपखण्डवार यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक के आधार पर किया गया। राजस्थान के चार अलग–अलग जिलों के उप–मंडलों में से प्रत्येक से 20 प्रतिशत सार्वजनिक और 20 प्रतिशत निजी प्राथमिक विद्यालयों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। इस अध्ययन में 34 सार्वजनिक और 30 निजी प्राथमिक विद्यालय शामिल किये गये थे।

निष्कर्ष

इस अध्ययन में शिक्षा की गुणवत्ता एवं शिक्षण सुविधाओं को तीन कोणों से देखा गया अर्थात इनपुट, प्रक्रिया और आउटपुट। इनपुट आयाम में ढांचागत और निर्देशात्मक सुविधाएं शामिल हैं, प्रक्रिया आयाम में अंग्रेजी और गणित के विषय में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया शामिल है, और आउटपुट आयाम में अंग्रेजी और गणित विषय में छात्रों का प्रदर्शन शामिल है। उपरोक्त तथ्यों पर आधारित विश्लेषण से प्राप्त किये गये निष्कर्ष निम्न है :–

सरकारी और निजी के दोनों प्रकार के विद्यालयों में लड़कों, लड़कियों और शिक्षकों के लिए अलग शौचालय की सुविधा पाई गई। गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अंग्रेजी में से प्रत्येक के लिए एक शिक्षक और सामान्य खेल और खेल सामग्री की उपलब्धता एक अच्छी गुणवत्ता का संकेतक देती हैं।

सरकारी स्कूल अपने निजी स्कूल समकक्षों की तुलना में स्थायी स्कूल भवन, प्रशासनिक कक्षों, कक्षाओं और खेल के मैदानों के मामले में ढांचागत सुविधाओं में बेहतर पाए गए। निर्देशात्मक सुविधा जैसे विशाल कक्षा, कक्षा पढ़ने का कोना, छात्रों के लिए बेंच और डेस्क की अच्छी गुणवत्ता, कक्षा–वार शिक्षण–शिक्षण उपकरण, और छह कंप्यूटर एक–तिहाई सरकारी विद्यालयों में 10 प्रतिशत निजी स्कूलों में ही पाये गये। मिडिल स्तर के सरकारी और निजी दोनों प्रकार के स्कूलों में लगभग दो–तिहाई शिक्षकों की कमी व सभी निजी स्कूलों में एडहॉक शिक्षक पाये गये। लगभग सभी निजी 88 प्रतिशत और 98 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में कला शिक्षा,

और स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के लिए अंशकालिक प्रशिक्षक नहीं पाये गये। एक तिहाई से अधिक सरकारी और दो तिहाई निजी स्कूलों में कार्य शिक्षा के अंशकालिक प्रशिक्षकों की कमी थी परन्तु शिक्षकों की संख्या और उनकी स्थिति निजी स्कूलों की तुलना में सरकारी स्कूलों में बेहतर पायी गयी, हालांकि शिक्षकों की पर्याप्त संख्या, जो शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सबसे बुनियादी शर्त है, न तो सरकारी और न ही निजी स्कूलों में मौजूद पाई गई।

निजी स्कूलों में सभी कंप्यूटर ठीक से काम कर रहे थे लेकिन सरकारी स्कूलों में सभी कंप्यूटर काम नहीं कर रहे थे। विकलांग बच्चों के लिए बाधा मुक्त पहुंच का अभाव, अपर्याप्त पेयजल सुविधा, सरकारी और निजी दोनों प्रकार के स्कूलों में पाई गई। दोनों प्रकार के स्कूलों में वार्षिक निर्धारित शैक्षणिक दिनों की तुलना में शैक्षणिक दिवस की कम संख्या का होना और स्वास्थ्य देखभाल की कमी और प्रबंधन की गुणवत्ता में गिरावट देखी गयी। निजी स्कूलों के पाँचवीं और आठवीं कक्षा के अंग्रेजी और गणित के शिक्षक निर्धारित कक्षा तक पहुँचने के लिए अधिक पाबंद थे और सरकारी स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में निर्धारित कक्षा में कम अनुपस्थित पाए गए। अधिकांश निजी स्कूल के शिक्षक अपने सरकारी स्कूल समकक्षों की तुलना में छात्रों के साथ बातचीत करने और छात्रों को व्यक्तिगत कार्य सौंपने की गतिविधियों में अधिक शामिल पाये गये।

सभी सरकारी और निजी स्कूलों के गणित शिक्षकों ने छात्रों की तैयारी की जांच किए बिना ही सीधे विषय का परिचय दिया। उनमें से लगभग सभी ने किसी शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग नहीं किया। उनमें से किसी ने भी छात्रों को समूहों में काम करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया व उन्हें स्कूलों की किसी अन्य गतिविधि में भी शामिल नहीं किया। कक्षा अवलोकन के दौरान पाठ्यपुस्तक के अलावा कक्षा में कोई पूरक पठन, शिक्षक मार्गदर्शिका और छात्र कार्यपुस्तिका का उपयोग किया जाना नहीं पाया गया। कक्षाओं में अंतःक्रिया की लगभग पूर्ण कमी की स्थिति भी सरकारी और निजी स्कूलों के कक्षा V और VIII की अंग्रेजी और गणित की कक्षाओं में शिक्षकों और छात्रों की नीरस प्रतिक्रिया और निष्क्रियता को प्रकट करती है। निजी स्कूलों में कई बाधाओं के होने के बावजूद और सरकारी स्कूलों में बेहतर ढांचागत और शिक्षण सुविधा के होने के बावजूद, पांचवीं और आठवीं कक्षा के निजी स्कूल के छात्रों ने अंग्रेजी पढ़ने, अंग्रेजी में समझने और गणित के लगभग सभी पहलुओं में अपने सरकारी स्कूलों के समकक्षों से बेहतर प्रदर्शन किया।

शैक्षणिक प्रभाव

छात्रों और उनके माता–पिता, शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों, योजनाकारों और नीति निर्माताओं के लिए नीति निर्माण और दिशा–निर्देशों के निर्धारण के लिए निम्न बिन्दुओं पर विचार किया जाना आवश्यक है।

विकलांग बच्चों के लिए बैरियर मुक्त पहुंच और छात्रों के लिए पर्याप्त शुद्ध पेयजल की सुविधा संबंधित स्कूल प्राधिकरण द्वारा उन स्कूलों में प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराई जानी चाहिए जिनमें यह सुविधाएं नहीं हैं। यह विकलांग बच्चों के सुगम आवागमन और स्कूलों में छोटे बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा की सुविधा प्रदान करेगा। अधिकांश सरकारी व निजी विद्यालयों में खेल का मैदान नहीं था। इसके अभाव में छात्रों को स्कूल जीवन के एक आवश्यक घटक के रूप में खेलने के अवसर प्राप्त नहीं हो पाते है। सरकार को आरटीई अधिनियम, 2009 के अनुसार अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करना चाहिए। खेल गतिविधियों के लिए एक खेल का मैदान प्रत्येक विद्यालय में विकसित होना चाहिए। बालक, बालिकाओं व शिक्षकों के लिए अलग–अलग शौचालय हैं लेकिन अधिकांश शौचालयों की सफाई नहीं हो पाती है। छात्र स्कूल में 7 घंटे से अधिक समय

व्यतीत करते है परन्तु उन्हें गंदे शौचालयों का उपयोग करने के लिए मजबूर किया जाता है जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों का कारण बन सकता है। अतः तत्काल स्कूल प्रशासन को इस मामले को बहुत गंभीरता से देखना चाहिए।

अधिकांश सरकारी और निजी प्राथमिक विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक नहीं थे और वे एडहॉक शिक्षकों के सहारे चल रहे थे। शिक्षा विभाग व राजस्थान सरकार को इस मामले पर तत्काल ध्यान देना चाहिए और नियमित आधार पर आवश्यक शिक्षकों की नियुक्ति के लिए तत्काल कदम उठाना चाहिए। निजी स्कूलों में अंग्रेजी और गणित के शिक्षक समय के अधिक पाबंद हैं और अपनी कक्षाओं को संवादात्मक बनाते हैं तो सरकारी स्कूलों में उनके समकक्ष ऐसा क्यों नहीं कर सकतें। सरकारी विद्यालयों में कक्षा शिक्षण के दौरान उचित पर्यवेक्षण किया जाना चाहिए। सभी विषयों में शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

निरन्तर पर्यवेक्षण व तद्नुरूप कार्यवाही से यह पाया गया कि किसी भी निजी स्कूल में कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के लिए अंशकालिक प्रशिक्षक नहीं थे। लेकिन कुछ सरकारी स्कूलों में कुछ शिक्षक उपलब्ध थे। कला शिक्षा, स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा और कार्य शिक्षा में पर्याप्त अंशकालिक प्रशिक्षकों के अभाव में छोटे बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कोई माध्यम प्राप्त नहीं कर पाते है। केवल संज्ञानात्मक गतिविधियों तक सीमित रहने से व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की सम्भावनायें कम हो जाती है। स्कूल प्रबंधन समिति को इस आवश्यकता को गंभीरता से समझना चाहिए। राजस्थान सरकार ने प्रत्येक स्कूल को छः कंप्यूटर प्रदान किए हैं लेकिन इनमें से बहुत कम ही काम आ रहे थे। वहीं निजी विद्यालयों के कम्प्यूटर निजी विद्यालयों द्वारा ही क्रय किये गये थे तथा वे सभी कम्प्यूटर चालू हालत में पाये गये। सरकारी स्कूलों में क्या गलत हुआ है? सरकारी स्कूल के छात्र–छात्राएं क्यों खामोश रहते है? क्या उन बच्चों के माता–पिता को इसकी जानकारी नहीं है? इसके बारे में पता लगाने के लिए उपयुक्त प्राधिकारी द्वारा जांच क्यों नहीं की जाती है? इस स्थिति को दूर करना आवश्यक है।

सभी शिक्षकों ने विषय का सीधे परिचय दिया। वे सीखने के लिए छात्रों की उत्सुकता व उनकी तत्परता के आंकलन के लिए प्राय ध्यान नहीं देते है और इस कारण विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर में वांच्छिक सुधार नहीं हो पाता है। इस स्थिति के महत्व व इसके नकारात्मक प्रभाव को समझकर अनुकूल कार्यवाही की जानी चाहिए।

अब कक्षा को सहभागी, संवादात्मक और आनंदमय बनाने पर जोर दिया जाना चाहिए और शिक्षार्थियों को भावनात्मक और संज्ञानात्मक रूप से व्यस्त किया जाना चाहिए। लेकिन एक भी शिक्षक अंग्रेजी और गणित पढ़ाने के दौरान शिक्षण सामग्री का उपयोग करते हुए नहीं मिला। सम्भवतः शिक्षक सहायक अध्यापन सामग्री का उपयोग करने में रूचि नहीं रखते है या स्कूलों में सामग्री ही उपलब्ध नहीं है। विद्यालय के प्रशासनिक प्रमुखों को इस मामले को देखना चाहिए और समाधान खोजना चाहिए।

लगभग सभी सरकारी स्कूलों में बेहतर ढांचागत और निर्देशात्मक सुविधा है और निजी स्कूलों की तुलना में अधिक नियमित शिक्षक हैं। इसके बावजूद निजी स्कूलों में पाँचवीं और आठवीं कक्षा के छात्रों ने अंग्रेजी में पढ़ने, अंग्रेजी की समझ और अंकगणित के लगभग सभी पहलुओं में सरकारी स्कूलों के अपने समकक्षों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। क्या यह सरकारी स्कूल प्रणाली का बहुत बडा उपहास नहीं है? शिक्षा विभाग और राजस्थान सरकार को इस तरह की विफलता के कारणों की तलाश करनी चाहिए और छात्रों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए ऐसी बाधाओं के उन्मूलन के लिए कुछ ठोस व बाध्यकारी कार्यक्रम शुरू करने

चाहिए। सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को सलाह दी जाती है कि वे छात्रों के प्रदर्शन में सुधार के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों व रणनीतियों का उपयोग करें।

इस सन्दर्भ में कुछ शोध समस्याएँ भावी अध्ययन के लिए उल्लेखित की जा रही है :–

- वर्तमान अध्ययन राजस्थान में एकल प्रशासन के तहत सरकारी और निजी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता पर किया गया है। वर्तमान अनुसंधान की बाह्य विश्वसनीयता स्थापित करने के लिए इसे दोहराया जा सकता है।
- ऐसे निजी प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता की जांच के लिए अध्ययन किया जा सकता है जो राजस्थान सरकार के अधीन नहीं हैं।
- माध्यमिक और वरिष्ठ/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता एक अन्य उभरता हुआ क्षेत्र है जिस पर भी अनुसंधान किया जा सकता है।
- वर्तमान अध्ययन केवल ग्रेड V और VIII के अंग्रेजी और गणित विषय में शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं के अवलोकन तक ही सीमित है। इसी के अनुरूप अन्य अनुसंधानों में अन्य विषय सम्मिलित किये जा सकते है, जैसे कि ग्रेड V और VIII में अंग्रेजी और गणित के अलावा शिक्षण–सीखने की प्रक्रियाओं और प्रक्रियाओं में अन्य विषयों को शामिल किया जा सकता है, जैसे कि मातृभाषा, विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान आदि।
- प्रत्येक राज्य में आर्थिक व सामाजिक स्थितियां भिन्न–भिन्न है जो कि शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त सम्बन्धित सरकार की शिक्षा के प्रतिबद्धता व शिक्षण नीति भी विद्यालयों में षिक्षा की गुणवत्ता के स्तर व शैक्षणिक उपलब्धियों को निर्धारित करती है। ऐसी स्थिति में राज्यों में तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह जाना जा सकता है कि किन–किन विशेष परिस्थितियों ने शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित किया। इस प्रकार का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षण नीति के निर्धारण में सहायक सिद्ध होते हैं।
- वर्तमान अध्ययन पाँचवीं और आठवीं कक्षा तक ही सीमित है। इसे अन्य ग्रेड में भी बढ़ाया जा सकता है।
- अंग्रेजी, गणित और विज्ञान के प्रमुख विषय में छात्रों के सीखने के स्तर की प्राप्ति का मूल्यांकन विशिष्ट शिक्षा स्तर जैसे प्राथमिक स्तर (कक्षा I से V), उच्च प्राथमिक स्तर (VI से VIII) और अधिक (IX से XII) के स्तर तक किया जा सकता है। इस प्रकार उपलब्धि के स्तरों में होने वाले क्रमशः परिवर्तनों को समझने के लिए अनुसंधान किये जा सकते है।

सन्दर्भ

1. बदख्शां, के. (2018)। बिहार के मध्य विद्यालयों में एक विषय के रूप में अंग्रेजी का लेनदेन। अप्रकाशित पीएचडी थीसिस, शांतिनिकेतन: विश्वभारती।

2. बालमोहनदास, वी. और शर्मा, एम. (2012) क्वालिटी टीचसर्: ए मस्ट फॉर क्वालिटी हायर एजुकेशन। यूनिवर्सिटी न्यूज, 16–22 जनवरी, 50 (03)।

3. बंगा, सी.एल. (2012)। गणित का शिक्षण। नई दिल्लीः शिप्रा पब्लिकेशन

4. कैथरीन, ओ। (2015)। तीन साल की मुफ्त प्राथमिक शिक्षा कार्यान्वयन के बाद सार्वजनिक और निजी प्राथमिक विद्यालयों में मानक चार विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन की तुलना। एजुकेशन लर्निंग एंड डेवलपमेंट का इंटरनेशनल जर्नल, 3(3)।

5. चेंग, वाई.सी. (1995ए), स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता: सिउ, पी.के. में अवधारणा, निगरानी और वृद्धि। और टैम टी.के. (ईडीएस), शिक्षा में गुणवत्ता: विभिन्न दृष्टिकोणों से अंतर्दृष्टि, हांगकांग, हांगकांग शिक्षा अनुसंधान संघ।

6. चिनारा, बी.डी. (2019)। मसौदा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2019 में शिक्षक शिक्षा: कुछ व्यावसायिक चिंताएँ। यूनिवर्सिटी न्यूज, अगस्त 12–18, 57 (32)।

7. चोंजो, पी.एन. (1994)। तंजानिया प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता: भौतिक सुविधाओं और शिक्षण शिक्षण सामग्री का आकलन। से लिया गया। 15 जनवरी 2015 को।

8. दास, बी.सी., साहू, पी.के., और यादव, डी. (2014)। भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा: समस्याएं और संभावनाएं, टवस.2. नई दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी प्रा. लिमिटेड

9. दास, बी.सी., साहू, पी.के.., और यादव, डी. (2014)। भारत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा: समस्याएं और संभावनाएं, वॉल्यूम। 1. नई दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी प्रा. लिमिटेड

10. दीवान, डी.बी. (2012)। राजस्थान में शिक्षा: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन प्री–विलय और पोस्ट–विलय। पुस्तकों के प्रकाशन की खरीद और बिक्री के लिए सोसायटी।

11. जिला सांख्यिकी एवं मूल्यांकन कार्यालय, डोडा (2014)। जिला डोडा के लिए सर्व शिक्षा अभियान पर मूल्यांकन रिपोर्ट। 16 मार्च 2015 को.चकि से लिया गया।

12. मसौदा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019। (मई, 2019)। नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

13. फ्रेडरिकसन, यू। (2004)। गुणवत्ता शिक्षा: शिक्षकों की मुख्य भूमिका। एजुकेशन इंटरनेशनल वर्किंग पेपर्स नं।